

आपका वंश:	आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुलमुत्तलिब पुत्र हाशिम हैं, तथा हाशिम कुरैश में से हैं, और कुरैश अरब में से हैं और अरब इस्माईल पुत्र इब्राहीम अलैहिस्सलाम की संतान हैं।
आपका जन्म एवं लालन-पालन:	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म हाथी वाले वर्ष मक्का के अंदर रबीउल अव्वल के महीने में हुआ, आपकी कुल आयु ६३ वर्ष थी, जिनमें से ४० वर्ष नुबुव्वत मिलने के पहले के हैं तथा २३ वर्ष नबी एवं रसूल के रूप में, आप अनाथ थे क्योंकि आपके पिता की मृत्यु आपने जन्म के पहले ही हो गई थी, आप अपने दादा अब्दुल मुत्तलिब के लालन-पालन में थे, तथा दादा की मृत्यु के बाद आपके चाचा ने आपका लालन-पालन किया।
आपका भेजा जाना:	आप इंसान एवं जिन्नात दोनों की ओर नबी व रसूल बना कर भेजे गए थे, अतः प्रत्येक वह व्यक्ति जिस तक आपकी दावत पहुँची और वह आप पर ईमान नहीं लाया तो वह काफ़िर है, चाहे जो भी हो।
आपकी दावत:	आपने तौहीद (एकेश्वरवाद), शिष्टाचार एवं सद्कर्म का निमंत्रण दिया, तथा शिर्क (बहुदेववाद), दुर्व्यवहार एवं कुकर्म से रोका।
इस्त्रा व मेअराज:	आप को मक्का से बैतुल मक्दिदस की इस्त्रा (रात्री में सैर) कराई गई, फिर सातों आसमान की मेअराज (भ्रमण) कराई गई, सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आपसे वार्तालाप किया तथा आप पर पाँच वक्त की नमाज़ें फ़र्ज़ कीं।
आपकी हिजरत एवं मृत्यु:	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना से मक्का की ओर हिजरत (पलायन) किया, तथा वहीं आपकी मृत्यु हुई, और मोमिनों की माता आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के कमरे में दफ़न किये गये।
आपका पहुँचा देना (अल्लाह के संदेश को):	अल्लाह ने आपके द्वारा इस्लाम धर्म को पूर्ण कर दिया, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने धर्म को स्पष्ट रूप से लोगों तक पहुँचा दिया, अमानत अदा कर दी, उम्मत को समझा दिया, अल्लाह के मार्ग में हर प्रकार से पूरी तरह जिहाद किया, अतः अब किसी के लिये संभव नहीं कि वह इस धर्म में कुछ वृद्धि करे।
महत्वपूर्ण युद्ध:	आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा लड़े गये महत्वपूर्ण युद्धों की संख्या सात है: बद्र, उहुद, खन्दक, खैबर, मक्का विजय, तबूक एवं हुनैन।
आपके संतान की संख्या सात है:	क्रासिम, इब्राहीम, अब्दुल्लाह इन्ही को तैयिब एवं त़ाहिर कहा जाता है, ज़ैनब, रुक़य्यह, उम्मे कुलसूम एवं फ़ातिमा, सभी की मृत्यु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन काल में ही हो गई थी, सिवाय फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के जिनकी मृत्यु आपके देहांत के छह माह बाद हुई। अल्लाह उन सबसे प्रसन्न हो।
आपके पत्नियों की संख्या बारह है:	खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, सौदह रज़ियल्लाहु अन्हा, हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा, ज़ैनब हिलालिय्यह रज़ियल्लाहु अन्हा, उम्मे सलमा हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा, ज़ैनब बिनत जहश रज़ियल्लाहु अन्हा, जुवैरिय्यह बिनत हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा, सफ़िय्यह बिनत हुयैय रज़ियल्लाहु अन्हा, उम्मे हबीबा रम्ला रज़ियल्लाहु अन्हा, रैहाना बिनत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हा एवं मैमूना बिनत हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा।
आपको दुग्धपान कराने वालियां:	आपकी माता आमिना बिनत वहब, आपके चाचा अबू लहब की दासी सुवैबह, हत्तीमा बिनत अबी जुऐब अस् सअदिय्यह रज़ियल्लाहु अन्हा।
सर्वप्रथम उतरने वाली आयत:	सूरह अलक्र में अल्लाह तआला का यह कथन: ﴿أَوْرَأَ بِأَسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ (۱) قَرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ (۲) الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ (۳) عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ (۴)﴾
सर्वप्रथम आप पर ईमान लाने वाले:	पुरुषों में सर्वप्रथम अबू बक्र सिदीक रज़ियल्लाहु अन्हु, महिलाओं में सर्वप्रथम मोमिनों की माता खदीजा बिनत ख़ुवैलिद रज़ियल्लाहु अन्हा, बच्चों में सर्वप्रथम अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु, स्वतंत्र किये हुये दासों में सर्वप्रथम ज़ैद बिन हारसह रज़ियल्लाहु अन्हु तथा दासों में सर्वप्रथम बिलाल बिन रबाह रज़ियल्लाहु अन्हु।
आपका हज्ज एवं उमरह:	आपने चार उमरे किये तथा सभी ज़िल क़अदा के महीने में किये, और हिज्रत के दसवें वर्ष एक हज्ज किया जिसको हज्जतुल वदाअ के नाम से जाना जाता है।
आपका आचरण:	अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۖ﴾ (निःसंदेह आपके आचरण एवं स्वभाव उच्च कोटि के हैं)। अल-क़लम: ४, तथा आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि: “आपके शिष्टाचार वही हैं जो क़ुरआन है”।
आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी पढ़ने का महत्व:	इब्नुल कैयिम रहिमहुल्लाह कहते हैं: (जब लोक एवं परलोक में बंदे का सौभाग्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत व मार्गदर्शन से जुड़ा है अतएव हर उस व्यक्ति पर वाजिब है जो अपने आपका शुभचिंतक है और अपनी मुक्ति व सौभाग्य चाहता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय में एवं आपकी जीवनी तथा सीरत के विषय में ज्ञान अर्जित करे, ताकि वह जाहिलों व अज्ञानियों की पंक्ति से निकल कर आपके अनुयायियों, आपके संगठन तथा समूह में शामिल हो जाए, और इस विषय में लोगों के कई प्रकार हैं: कुछ कम करने वाले, तो कुछ अत्याधिक करने वाले एवं कुछ तो बिल्कुल वंचित ही हैं, और फ़ज़ल (कृपा) तो अल्लाह के हाथ में है जिस पर चाहता है उस पर अपनी कृपा दृष्टि रख देता है, और अल्लाह बड़ा महान है फ़ज़ल व कृपा वाला)।